Prof. Keerti Kumari
Assistt Prof.
Deptt of Psychology,
S.R.A.P. College, Bara Chakia, East Champaran
(A constituent unit of B.R.A. Bihar University, MFP)

Subject – Psychology
Topic – Manic Depressive
Class – B.A. Part I (Hon) 2nd Paper
Day – Saturday
Date – 19/02/2022
Period – 2nd
Contact No. – 9801466117 / 6202275708

Q. Describe the symptoms and causes of Manic depressive psychosis ?

प्रश्न :- उत्साह-विषाद के लक्षणों एवं कारणों का वर्णन करें ?

उत्तर :- प्राचीन ग्रीक भाषा एवं अन्य भाषाओं के पुस्तकों में उत्साह-विषाद मनोविकृति Manic Depressive Psychosis का वर्णन मिलता है। सर्वप्रथम प्राचीन मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि अत्यधिक प्रसन्न रहना Mania व अत्यधिक उदास रहना Depression कहलाता है। ये दोनों दो प्रकार के मानसिक रोग हैं। लेकिन आगे चलकर फालरेट तथा बलेजार (Falret and Baillarger) ने बताया कि ये दो भिन्न मानसिक रोग नहीं हैं बल्कि एक ही रोग के दो लक्षण हैं। इसी विचार के सम्बन्ध में क्रेपलिन का ध्यान गया तथा उसने 1889 में उत्साह-विषाद मनोविकृति शब्द का प्रयोग किया। क्रेपलिन का कहना है कि इसमें रोगी एक ही रोग से ग्रस्त होता है लेकिन इस रोग के दो ~~[illegible]~~ विरोधी लक्षण होते हैं। अत्यधिक प्रसन्नता की अवस्था में विचारों की उड़ान, मनोगत्यात्मकता, सक्रियता व उत्साह के लक्षण प्रकट होते हैं। लेकिन इसके विपरीत उदासीनता की अवस्था में रोगी में मानसिक अवरोध, विचारों में तर्कहीनता, मनोगत्यात्मकता में कमी, आदि के लक्षण दिखाई पड़ते हैं। क्रेपलिन के इस विचार में बाद के अध्ययनों के आधार पर परिवर्तन हुए हैं लेकिन मूल स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं हुआ और आज भी दिखाई पड़ता।

उत्साह विषाद के सामान्य लक्षण :-

General Symptoms of Manic depression Psychosis :-

1. मिथ्या विश्वास आदि : Faith or Flight Ideas and Power- ऐसे रोगी अपने आप को बुद्धिमान धन तथा स्वयं को बहुत समझने लगते हैं। कोई इनके मानव रूप के प्रति विश्वास आदि भी करते होते हैं। कल्पना द्वारा रोगी मिथ्या निर्माण करता है। किसी की मृत्यु या हत्या हो जाने पर वह उसे सहन नहीं कर सकता तथा स्वयं कभी हत्या का आरोप अपने पर ले लेता है।

2. अति उत्तेजना और चेतना का खोना :- रोगी अधिक उत्तेजनशील एवं उत्तेजित स्वभाव का होता है। जिससे उसे अपनी चेतना का ज्ञान नहीं होता है। उस समय तात्कालिक वातावरण का भी ज्ञान नहीं रहता है। कुछ लोग ने बताया है कि ऐसे रोगी को अपने वातावरण एवं अपनी चेतना का ज्ञान नहीं होता।

3. प्रत्यभिज्ञान की अयोग्यता :- रोगी के एकाग्रता की कमी होने के कारण प्रत्यभिज्ञान का दोष होता पाया जाता है। कुछ बातों या समझने के बाद देखने पर वह उन्हें बातों को असीम रखता है।

4. विपर्यय तथा विभ्रम : उन्माद के रोगियों के विपर्यय तथा विभ्रमों का शिकार होना है। उत्साह की अवस्था में किसी भी कल्पना को सच मान बैठता है तथा विषाद की स्थिति नहीं क्योंकि उसे वास्तु के रूप में दिखाई देता है।

5. यौन भावना :- इस मनोविक्षिप्तता से ग्रस्त व्यक्तियों के यौन संवेग तीव्र रूप से प्रदर्शित होते हैं। जो कभी-कभी ऐसे रोगियों के को सम्बन्धी अपराध प्राप्त होती ही रहते हैं।

6. संवेगात्मक तनावों की अधिकता :- उत्साह की स्थिति के रोगी अत्यंत आशावादी तथा उनके विचार तथा कार्य की गति अत्यंत तीव्र होती है। उनकी क्रियाओं से ऐसा स्पष्ट होता है कि इनमें अत्यधिक शक्ति आ गयी है।